

पारीक परिवार : परिचय

Duration : 02.58

Transcribed words : 412

- संगीत -

00.08 ऋषि नारायण पारीक : मेरा नाम ऋषि नारायण पारीक है... और मैं पंडित गोपाल नारायण जी बोहरा का लड़का हूँ... और हम यहाँ जयपुर में बोहरा जी के बाग में रहते हैं...

00.21 कमलेश पारीक : मेरा नाम कमलेश पारीक है... मैं पंडित गोपाल नारायण बोहरा की पुत्रवधु हूँ... और हम जयपुर के निवासी हैं...

00.30 ऋषि नारायण पारीक : पंडित गोपाल नारायण जी बोहरा का नाम जयपुर में ही नहीं, राजस्थान में नहीं, अपितु पूरे विश्व में एक प्रख्यात, प्राचीर विद्व होने के नाते बहुत प्रसिद्ध है... और मुझे बड़ा गर्व है... मैं अपने को गौरवान्वित महसूस करता हूँ कि मैंने उनके परिवार में, और यहाँ जयपुर में जन्म लिया...

01.02 कमलेश पारीक : पंडित गोपाल नारायण बोहरा, वो एक सादा जीवन व्यतीत करते थे... और हम पुरानी मर्यादाओं के हिसाब से रहते थे... तो मैं और मेरी जेठानी जी, हम लोग सुबह उठके रसोई में जाते थे और घूँघट में रहते थे... और वहाँ चाय बगैरह, खाना बगैरह बनाते थे... वो, बोहरा जी वहाँ पर आते थे, रसोई में, और वहीं हमारी सास बैठी रहती थी, वहीं बैठ के वो चाय बगैरह पिया करते थे... चाय पीते थे, तब कोई भी चर्चा होती थी, घर की, परिवार की, तो हम लोग बनाते रहते थे बैठे बैठे... बैठ हुए ही बनाते थे किचन में... और वो करते रहते थे, हम सुनते रहते थे, घूँघट में... हम जवाब नहीं देते थे... सिर्फ सुनते थे...

01.43 ऋषि नारायण पारीक : सन् 68 में मेरे पिताजी रिटायर हुये, तब से ले के बीस साल तक, करीब 88 तक उन्होंने जयपुर राज घराने में कार्य किया... और कई पुस्तकों का सम्पादन, प्रकाशन और ट्रान्सलेशन, वो किया... तो हम मोर और लैस बहुत समय से, पूर्वजों से, हमारे पूर्वज जयपुर राज घराने से जुड़े हुये हैं...

02.09 कमलेश पारीक : मेरे ससुर पंडित गोपाल नारायण बोहरा, उनका शयनकक्ष था... और आप पंडित गोपाल नारायण बोहरा हैं... और आप उनकी धर्मपत्नी श्रीमती मगद(मगन) देवी... और ये उनके एक लड़के थे, रहने वाले हमारे, उसके हाथ की पेंटिंग है, राधा कृष्ण की... और यहाँ बोहरा जी, पंडित गोपाल नारायण जी बोहरा यहाँ पर अध्ययन करते थे... यहाँ पर उन्होंने सूरदास की काँपी किताबें और पैंतीस किताबों का, किसी के सम्पादन, किसी का भूमिका, किसी का अर्थ, ये किया था... यहाँ पर जयपुर के गणमान्य विद्वान उनके पास शाम को तीन बजे से रात को आठ बजे तक पढ़ने के लिये आया करते थे...